सर्व धर्म प्रार्थना

प्रातः स्मरामि

प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरदात्म तत्वम्
सत् – चित् सुखम् परमहंस गतिम् तूरीयम्।
यत् स्वप्न – जागर सुषुप्तम् अवैति नित्यम्
तद् ब्रह्म निष्कलहम् अहं न च भूत संघः।।1।।

प्रातर् भजामि मनसो वचसामगम्यम्
वाचो विभान्ति निखिला यदनुग्रहेण।
यत् नेति नेति, वचनैर् निगमा अवोचुस
तं देव देवममाच्युत आहुरआग्रयम्।।2।।
प्रातर् नमामि तमसः परमर्क वर्णम्
पूर्णम् सनातनपदम् पुरूषोत्तमाख्यम्
यस्मिन इदम् जगदशेषमशेष मूर्ति
रज्ज्वाँ भुजंगम् इव प्रतिभासितं वै।।3।।

सरस्वती वन्दना

या कुन्देन्दु–तुषार–हार–धवला, या शुभ्र–वस्त्रावृता
या वीणावरदंड मंडित करा; या श्वेत पद्मासना।
या ब्रह्माऽच्युत शंकर–प्रभृतिभिर्, देवैः सदा वन्दिता
सा माम् पातु सरस्वती भगवती, निःशेष जाड्यापहा।।

गुरू महिमा

गुरूर् ब्रह्मा, गुरूर् विष्णू, गुरूर् देवो महेश्वरः।
गुरूः साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरूवैनमः।।

राम धुन

रघुपति राघव राजा राम – पतित पावन सीताराम
सीताराम सीताराम – भज प्यारे तू सीताराम
ईश्वर अल्लाह तेरे नाम – सबको सन्मति दे भगवान
रघुपति राघव राजा राम – पतित पावन सीताराम

नाम धुन

जय बोलो सत धर्मो की, जय बोलो सत कर्मो की।
जय बोलो मानवता की, जय बोलो सब जनता की।।
पिछडी कोई न जाति हो, सब से सब की प्रीति हो।
देश धर्म से नीति हो, हम सत के ही साथी हो।।
जय बोलो .....
हम सब कष्ट उठायेंगे, सब मिल कर सुख पायेंगे।
सब मिल प्रभु गुण गायेंगे, सतं का जस फैलायेंगे।।
जय बोलो .....

व्यक्तिगत आस्था प्रार्थना

- इनडिविजुवल फेथ प्रेयर (वर्णमाला / अल्फाबेटिकली)

मौन प्रार्थना

- मौन प्रार्थना (एक मिनट के लिए)

व्ही शैल आव्हर कम

व्ही शैल ओव्हरकम। व्ही शैल ओव्हरकम।
व्ही शैल ओव्हरकम सम डे.....
ओ डीप इन माय हार्ट, आई डू बिलीव्ह
दैट व्ही शैल ओव्हरकम सम डे..... (1)

व्हील वॉंक हैंड इन हैंड, व्ही विल वॉंक हैंड इन हैंड
व्हील वॉंक हैंड इन हैंड, सम डे..... ओ डीप (2)

व्ही शैल लिव्ह इन पीस, व्ही शैल लिव्ह इन पीस
व्ही शैल लिव्ह इन पीस, सम डे..... ओ डीप (3)

द ट्रुथ विल मेक अस फ्री, द ट्रुथ विल मेक अस फ्री,
द ट्रुथ विल मेक अस फ्री, सम डे..... ओ डीप (4)

व्ही आर नॉट अफ्रेड, व्ही आर नॉट अफ्रेड,
व्ही आर नॉट अफ्रेड टूडे ..... ओ डीप (5)

हर देश में तू, हर भेष में तू

हर देश में तू हर भेष में तू, तेरे नाम अनेक, तू एक ही है।
तेरी रंग भूमि, यह विश्व भरा, सब खेल में मेल में तू ही तू है।।
सागर से उठा बादल बन के, बादल से फूटा जल हो करके।
फिर नहर बना नदिया गहरी, तेरे भिन्न प्रकार तू एक ही है।।
चींटी से भी अणु परमाणु बना, सब जीव जगत का रूप लिया।
कहीं पर्वत वृक्ष विशाल बना, सौन्दर्य तेरा तू एक ही है।।
यह दिव्य दिखाया है जिसने, वह है गुरू देव की पूर्ण दया।
तुकड़या कहीं और न कोई दिखा, बस मैं और तू सब एक ही है।।

शान्ति पाठ

सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु
सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मां कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्
ओ3म् शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः।।